87

अग्रसेन चालीसा

साथ में - प्रणाम अग्रोहा • महालक्ष्मी चालीसा • सरस्वती चालीसा

डा. मनोहरलाल गोयल

डॉ० मनोहरलाल गोयल

('ताऊ' राजस्थानी)

जन्म स्थान : टीबा बसई (झूंझनू)
तिथि : १५ अगस्त १९३०
स्थाई निवास : जमशेदपुर-झारखण्ड
प्रकाशित पुस्तकों (लिखित एवं सम्पादित) की संख्या दो दर्जन से अधिक।

- दैनिक जागरण, प्रभात खबर और रांची एक्सप्रेस में नियमित स्तंभ लेखन।
- विधा-काव्य, आलेख, कथा, संदर्भ, शोध, व्यंग्य
- भाषा : राजस्थानी एवं हिन्दी, (भोजपुरी भी)
- स्वर : हास्य-व्यंग्य, समाज, राष्ट्रीयता, कला, संस्कृति
- राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानोपाधि, पुरस्कार, सारस्वत सम्मान, आतिथ्य आदि चार दर्जन से अधिक संस्थाओं द्वारा

स्थान - कोलकाता, पटना, हैदराबाद, रानीगंज, भागलपुर, आसनसोल, मथुरा, नालंदा, झांसी, चाईबासा, चक्रधरपुर, डालटनगंज, राउरकेला, रायरंगपुर, झाझा, देवघर, अग्रोहा, राँची, रामगढ़ कैंट, सरायकेला, झुमरी तिलैया, मुजफ्फरपुर, भीलवाड़ा, पानीपत, बलियां, चंडीगढ़, और जमशेदपुर आदि।

सम्पर्क : गोयल भवन, बिष्टुपुर, जमशेदपुर-८३१००१

अग्रसेन चालीसा

- प्रणाम अग्रोहा
- महालक्ष्मी चालीसा
- सरस्वती चालीसा

रचनाकार
डा. मनोहरलाल गोयल

प्रकाशक
काव्यलोक प्रकाशन
गोयल भवन, बिष्टुपुर, जमशेदपुर - 831001

मुद्रक
गोयल पेपर उद्योग
जुगसलाई, जमशेदपुर - 831006

प्रथम वार 1997, पुनः 2003 ● सहयोग दस रुपये

अग्रसेन चालीसा

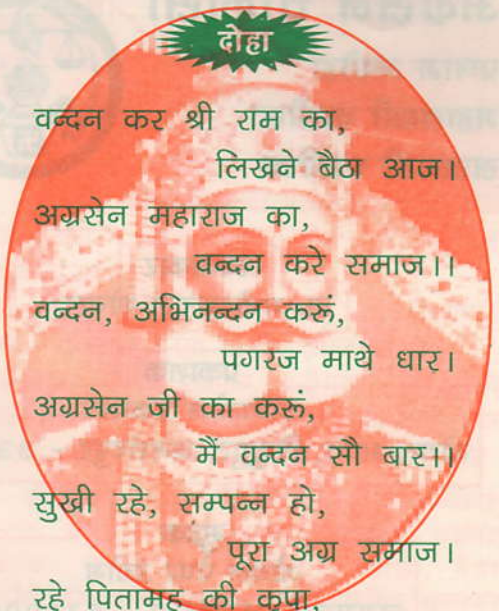

दोहा

वन्दन कर श्री राम का,
लिखने बैठा आज।
अग्रसेन महाराज का,
वन्दन करे समाज।।
वन्दन, अभिनन्दन करूं,
पगरज माथे धार।
अग्रसेन जी का करूं,
मैं वन्दन सौ बार।।
सुखी रहे, सम्पन्न हो,
पूरा अग्र समाज।
रहे पितामह की कृपा,
ऐसा आए राज।।

नमो-नमो हे पिता हमारे ।
अग्रवंश के तुम्ही सहारे ।१।
मन से जो भी तुम्हे पुकारे ।
तुमने आकर कार्य संवारे ।२।
तुम्हीं हमारे पिता-भ्रात हो ।
गुरु तुम्ही हो, तुम्ही तात हो ।३।
तुमने ऐसा मार्ग दिखाया ।
जन हितकारी मन को भाया ।४।
करें आज हम तेरी पूजा ।
तुम सा प्रेरक मिला न दूजा ।५।
सिर पर मुकुट तुम्हारे साजे ।
हाथों में तलवार विराजे ।६।
लोकतंत्र की ध्वज फहराई ।
महाराजा की पदवी पाई ।७।
शूरवीर थे, अद्भुत ज्ञानी ।
नाग राज ने महत्ता मानी ।८।

वैवाहिक संबंध बनाया ।
पितामह का मान बढ़ाया ।९ ।
नाग हमारे होते मामा ।
होते हैं अतुलित बलधामा ।१० ।
जनवादी, मानवता वादी ।
कहलाए तुम समतावादी ।११ ।
जब अग्रोहा नगर बसाया ।
ऊंच-नीच का भेद मिटाया ।१२ ।
ऐसा तुमने चलन चलाया ।
आपस में सद्भाव बढ़ाया ।१३ ।
तब अग्रोहा में जो आता ।
रहने को घर, धन भी पाता ।१४ ।
ईंट और मुद्रा की थैली ।
खुशियों से भर देती झोली ।१५ ।
गोत्र अठारह तुमसे पाए ।
अग्रसेन सुत हम महलाए ।१६ ।

हम सब तेरा ही गुण गाते ।
तेरी जय-जयकार मनाते ।१७ ।
कृपा तुम्हारी जिस पर होती ।
लक्ष्मी, सरस्वती संग रहती ।१८ ।
लक्ष्मीजी आराध्य हमारी ।
सरस्वती के हमी पुजारी ।१९ ।
तुमसे ही सीखा गोपालन ।
गो माता है, गोपालन धन ।२० ।
गो सेवा आदर्श हमारा ।
जीवन में 'गो' बनी सहारा ।२१ ।
भव्य तुम्हारा रूप सुहाए ।
तन-मन में शक्ति भर जाए ।२२ ।
तुमने जो सद्मार्ग दिखाया ।
वही मार्ग हमने अपनाया ।२३ ।
मितव्यता का पाठ तुम्हारा ।
दान, धर्म आदर्श हमारा ।२४ ।

परहित ही स्वधर्म बनाया ।
सेवा भाव सदा अपनाया ।२५।
मन मन्दिर में तुम्हें बिठाकर ।
तेरी सीखों को अपना कर ।२६।
हमने विद्यालय बनवाए ।
अस्पताल हमने खुलवाए ।२७।
जनहित में धन हमने खरचा ।
जिसकी हुई लोक में चर्चा ।२८।
हमने अपना धर्म निभाया ।
तब तक कभी न संकट आया ।२९।
बढ़ा मान-सम्मान हमारा ।
आदर मान लगा अति प्यारा ।३०।
पर व्यवधान आज दिखता है ।
एक वर्ग भटका लगता है ।३१।
नव धनाढ्य यह वर्ग भ्रमित है ।
मोह-माया, अति अहम् ग्रसित है ।३२।

सुख, सुविधा ऐश्वर्य लूटने ।
भौतिकता में लगा डूबने ।३३।
इसको मार्ग दिखाना होगा ।
तुम्हें धरा पर आना होगा ।३४।
कठिन नहीं है तेरा आना ।
नहीं चलेगा और बहाना ।३५।
आओ, आकर राह दिखाओ ।
आकर शुभ संदेश सुनाओ ।३६।
हम भटकन से छुट्टी पाएं ।
नवजीवन, नवशक्ति जुटाएं ।३७।
विनती करते अग्र बंधु हम ।
ज्योति जले, मिट जाय घोर तम ।३८।
नैतिकता, मानवता जागे ।
झूंठी शान, तिक्तता भागे ।३९।
गोयल तेरा सुमिरन करता ।
प्रतिदिन तुझको पाती लिखता ।४०।

दोहा

तन-मन से करता सदा,
तेरा ही गुण गान।
जीवन में मुझको बना,
एक भला इन्सान।।
मेरे हृदय में रहे,
सदा तुम्हारा ध्यान।
अग्रोहा के देवता,
तुम हो बहुत महान।।
विनती मेरी आपसे,
देना इतनी भीख।
अग्रवाल सब, सर्वदा,
मानें तेरी सीख।।

▪ ▪ ▪

प्रणाम अग्रोहा

दोहा

श्री गणपति को कर नमन,
सुमिरन कर श्री राम।
अग्रोहा की भूमि को,
सादर करूं प्रणाम।।
'चार धाम' में जुड़ गया,
नया पांचवां धाम।
दर्शन को सब चल पड़े,
ले अग्रोहा नाम।।
जहां राज करते रहे,
अग्रसेन महाराज।
पुरखों की इस भूमि पर,
अग्रवंश को नाज।।

नमो-नमो अग्रोहा नगरी ।
पावन पुण्य भूमि यह सगरी ।१।
पुरखों की धरती अति प्यारी ।
रही प्रेरणा स्रोत हमारी ।२।
यहीं पितामह का था वासा ।
अग्रवंश का मूल निवासा ।३।
वैभवशाली था अग्रोहा ।
जिससे हर आगन्तुक मोहा ।४।
बस जाता था जो भी आता ।
नगर निवासी वह कहलाता ।५।
वहां सभी सुविधाएं पाता ।
सुखी और सम्पन्न कहाता ।६।
समतावादी राज यहां था ।
लोकतंत्र सरताज यहां था ।७।
अग्रसेन महाराज कहाए ।
जनगण का झंडा फहराए ।८।

इस धरती की महिमा न्यारी ।
रही अग्रवालों की प्यारी ।९।
उजड़ा और बसा अग्रोहा ।
टकराया लोहा से लोहा ।१०।
लेकिन मिटा नहीं अग्रोहा ।
लगता रहा घाव पर फोहा ।११।
बात हुई यह बहुत पुरानी ।
लेकिन कल्पित नहीं कहानी ।१२।
सत्य सामने, नहीं छिपा है ।
खेड़ों में इतिहास दबा है ।१३।
आज पुनः वह शुभ दिन आया ।
अग्रोहा ने पुनः लुभाया ।१४।
बसने लगा नया अग्रोहा ।
आनेवालों का मन मोहा ।१५।
अब अग्रोहा धाम हो गया ।
सकल विश्व में नाम हो गया ।१६।

दिल्ली से यह दूर नहीं है ।
हरियाणा की पुण्य मही है ।१७।
नगर हिसार राह में आता ।
हर आगत को राह दिखाता ।१८।
थोड़ा सा आगे बढ़ जाओ ।
दिव्यधाम मिनटों में पाओ ।१९।
यह अग्रोहा धाम हमारा ।
तीरथ बना अनोखा न्यारा ।२०।
देकर धोक बढ़ोगे आगे ।
पाओगे सब कुछ बिन मांगे ।२१।
देख भव्यता दंग रहोगे ।
किस-किस से तब नहीं कहोगे ।२२।
किसे न ऐसा रूप सुहाए ।
स्वर्ग लोक सा दृश्य दिखाए ।२३।
ऐसा है यह धाम अनोखा ।
भव्य, विशाल न अब तक देखा ।२४।

तृप्ति नहीं आंखों को होती ।
आँखों में भरते सुख-मोती ।२५।
जगह-जगह हरियाली छाई ।
सौरभ, सुषमा बहुत लुभाई ।२६।
देवालय का भव्य भवन है ।
सुन्दरता को यहां नमन है ।२७।
अग्रसेन जी यहां विराजें ।
मंडप में लक्ष्मीजी साजें ।२८।
और साथ माँ सरस्वती हैं ।
दोनों बहनें भाग्यवती हैं ।२९।
उन्हें धोक देकर सुख पाओ ।
मनोकामना पूर्ण बनाओ ।३०।
शक्ति सरोवर के कर दर्शन ।
कर स्नान, पुण्य कर अर्जन ।३१।
मारुति के दर्शन पाना ।
सवा मनी प्रसाद चढ़ाना ।३२।

करो सती माता के दर्शन ।
उनका है अपना आकर्षण ।३३।
फिर खेड़ों के दर्शन पाना ।
इन खेड़ों में छिपा खजाना ।३४।
इस माटी का तिलक लगाओ ।
बार-बार अग्रोहा आओ ।३५।
पितृभूमि यह दिव्य धरा है ।
आकर्षण चहुं ओर भरा है ।३६।
दान, दया साहस उत्प्रेरक ।
सत्य, धर्म, मानवता प्रेरक ।३७।
इस तीरथ के दर्शन पाओ ।
मानव जीवन सफल बनाओ ।३८।
आपस में सद्भाव बढ़ाओ ।
अग्रसेन के दूत कहाओ ।३९।
अग्रसेन की जय-जय गाओ ।
अग्रोहा का मान बढ़ाओ ।४०।

दोहा

अग्रवंश के वंशजो,
अग्रवाल कुल पूत।
शांति और सद्भाव के,
बने रहें हम दूत।।
आपस में मिलकर रहे,
अपना भारत देश।
अग्रोहा की भूमि ने,
दिया यही संदेश।।
गोयल के मन में उसी,
अग्रोहा का नाम।
अग्रवाल सब देख लें,
पुरखों का यह धाम।।

▪▪▪

महा लक्ष्मी चालीसा

दोहा

गुरु चरणों का ध्यान धर,
पग रज माथे धार।
लक्ष्मी चालीसा लिखूं,
भरदे मां भंडार।।
भरदे मां भंडार तू,
जग से मिटे अभाव।
सभी सुखी सम्पन्न हों,
ला ऐसा बदलाव।।
हाथ जोड़कर मैं खड़ा,
आया तेरे द्वार।
माता तेरी हो कृपा,
इतनी है मनुहार।।

नमो-नमो हे लक्ष्मी माता। ।
सकल विश्व की भाग्य विधाता । १ ।
धन सम्पत्ति की देने वाली ।
तू करती सबकी रखवाली । २ ।
जिस पर कृपा तुम्हारी होती ।
देती उसको हीरे-मोती । ३ ।
तेरा रूप, अरूप निराला ।
अंधियाले में हो उजियाला । ४ ।
दया करो माँ, भर दो थाली ।
मना सकूं सुख से दीवाली । ५ ।
ज्योत्तिर्मय हो यह जग सारा ।
सत्य, धर्म का बजे नगाड़ा । ६ ।
दानवता के गढ़ ढह जाएं ।
मानवता को सब अपनाएं । ७ ।
कृपा दृष्टि तूने जब डाली ।
दूर हुई सबकी कंगाली । ८ ।

तू राजा को रंक बना दे ।
भिखमंगे को राज दिलादे ।९ ।
छप्पर फाड़ किसी को देती ।
कुपित हुई तो सब हर लेती ।१० ।
जहां नहीं लक्ष्मी का वासा ।
उस घर में है घोर निराशा ।११ ।
लक्ष्मीनारायण की पूजा ।
इससे बढ़कर पुण्य न दूजा ।१२ ।
नारायण की तू अति प्यारी ।
इस जोड़ी पर दुनियां वारी ।१३ ।
जो दोनों को साथ पुकारे ।
उसके कष्ट मिटेंगे सारे ।१४ ।
शुभ होगी लक्ष्मी उस घर में ।
धन घट भर कर लाए कर में ।१५ ।
नारायण को संग में लाए ।
उल्लू नहीं, गरुड़ पर आए ।१६ ।

लक्ष्मीनारायण शुभ दाता ।
तेरा गुण सारा जग गाता ।१७ ।
जो तेरी करता है पूजा ।
नारायण को कहता दूजा ।१८ ।
उसको भी लक्ष्मी मिल जाती ।
लेकिन उल्लू पर चढ़ आती ।१९ ।
सुख, सौभाग्य छोड़ कर आती ।
बुरे व्यसन साथ में लाती ।२० ।
तू चपला, चंचल कहलाती ।
जैसे आती, वैसे जाती ।२१ ।
लक्ष्मी वहीं, जहां नारायण ।
राम बिना कैसी रामायण ।२२ ।
हुए सभी लक्ष्मी के दासा ।
सबको लक्ष्मी की अभिलाषा ।२३ ।
पिता तुम्ही हो, तुम ही माता ।
मित्र तुम्ही हो, तुम ही भ्राता ।२४ ।

माया का भूखा जग सारा ।
हर बल लक्ष्मीजी से हारा ।२५।
कुछ तुम को पा मद में झूले ।
नैतिकता, मानवता भूले ।२६।
संतों में भी लिप्सा जागी ।
रहे नहीं, त्यागी - वैरागी ।२७।
लक्ष्मीनारायण की जोड़ी ।
लक्ष्मी के भक्तों ने तोड़ी ।२८।
नारायण को दूर भगाया ।
लक्ष्मीपति संबोधन पाया ।२९।
'माता' कह कर 'पति' बनजाते ।
लक्ष्मी के मद में मदमाते ।३०।
कैसा यह प्रपंच रचाया ।
लक्ष्मी ने सबको भरमाया ।३१।
लिखा आज मैंने चालीसा ।
मांग रहा तुमसे आशीसा ।३२।

मेरे घर भी आओ माता ।
आंगन में सुख लाओ माता ।३३।
कवियों पर हो कृपा आप की ।
लक्ष्मी आए-बिना श्राप की ।३४।
उल्लू पर चढ़ कभी न आना ।
माता, करना नहीं बहाना ।३५।
तू तो मेरे मन की जाने ।
सरस्वती सुत मुझको माने ।३६।
बुद्धि-विवेक नहीं हर लेना ।
दोनों बहिनें मिल-जुल रहना ।३७।
इस धरती का भाग्य जगाना ।
दानवता को दूर भगाना ।३८।
मानवता की करो प्रतिष्ठा ।
सबकी रहे सत्य में निष्ठा ।३९।
इस धरती पर नवयुग लाओ ।
आपस में सद्भाव बढ़ाओ ।४०।

दोहा

हाथ जोड़कर मैं खड़ा,
माता तेरे द्वार।
गोयल पर कृपा करो,
इतनी सी मनुहार।।
तन से, मन से, लगन से,
करता तुम्हें प्रणाम।
लक्ष्मी, सरस्वती करो,
मेरे घर विश्राम।।
मिल-जुलकर दोनों रहो,
जग का हो उपकार।
एक दूसरे के बिना,
जीवन है निःसार।।

▪ ▪ ▪

सरस्वती चालीसा

दोहा

पीत वसन धारण किए,
विद्या की भंडार।
वन्दनीय मा शारदे,
खोल ज्ञान के द्वार।।
सरस्वती माँ को नमन,
सत-सत बार प्रणाम।
आलोकित करती रहो,
जीवन पथ अविराम।।
गोयल तेरी शरण में,
माता रखना टेक।
मन का मैला साफ कर
भरना बुद्धि-विवेक।।

वीणा वादिनि माता वर दे ।
सकल विश्व ज्योतिर्मय करदे ।१।
अंधकार अज्ञान मिटादे ।
ज्ञान दीप घर-घर पहुंचा दे ।२।
विद्या धन ही सर्वोत्तम धन ।
ज्ञान ज्योति से भरदे जीवन ।३।
मूर्ख, अनाड़ी रहे न कोई ।
सब पर कृपा तुम्हारी होई ।४।
तुम विद्या की देने वाली ।
द्वेष, क्लेश हर लेने वाली ।५।
शुभ्र प्रभा सी तुम जब आती ।
आलोकित तन-मन कर जाती ।६।
जिस पर होती कृपा तुम्हारी ।
उसे पूजते सब नर-नारी ।७।
सुयश उसी को मिलता जग में ।
अंश तुम्हारा हो रग-रग में ।८।

ज्ञान तुम्ही, विज्ञान तुम्ही हो ।
मान और सम्मान तुम्ही हो ।९।
होती सदा ज्ञान की पूजा ।
वेद-शास्त्र सम्मत स्वर गूंजा ।१०।
वेद-पुराण शास्त्र विख्याता ।
पढ़े वही, जो तुमको पाता ।११।
वीणापाणी सरस्वती तुम ।
हंस वाहिनी, कमला भी तुम ।१२।
नाम अनेकों तुमने पाए ।
रूप अनेकों ही दिखलाए ।१३।
कमल पुष्प पर सदा विराजो ।
मंगल भाव हृदय में साजो ।१४।
लक्ष्मीजी की हो तुम बहना ।
दोनों बहनें मिल-जुल रहना ।१५।
चिन्ता और कुबुद्धि मिटाना ।
सद्भावों की पौध लगाना ।१६।

कालीदास महा अज्ञानी ।
तुमने उसे बनाया ज्ञानी ।१७।
आ बैठो जिह्वा पर जिसके ।
ज्ञान चक्षु खुल जाएं उसके ।१८।
वेद व्यास, विद्यापति, मीरा ।
तुमने अनगिन धरे शरीरा ।१९।
दिव्य स्वरूप तुम्हारा माता ।
हंस वाहिनी रूप सुहाता ।२०।
चार भुजाएं तुमने पायी ।
चतुर्भुजी देवी कहलायी ।२१।
एक हाथ में कमल - विराजे ।
चक्र दूसरे में माँ साजे ।२२।
पुस्तक धारण करने वाली ।
पीत वसन तव छटा निराली ।२३।
तुम वीणा वादन करती हो ।
राग-द्वेष सब हर लेती हो ।२४।

कागज पर जब कलम चलेगी ।
ग्रंथों का भंडार भरेगी ।२५।
धनी कलम का वह कहलाता ।
वरद हस्त मा तेरा पाता ।२६।
वीणापाणी तुम जग माता ।
अष्ट सीद्धि, नवनिधि की दाता ।२७।
चतुर जनों की तुम चतुराई ।
तुम ही कवियों की कविताई ।२८।
मानवता में तेरा वासा ।
दानवता का करो विनाशा ।२९।
तुम बिन रहे बुद्धि का टोटा ।
जैसे हो सिक्का, पर खोटा ।३०।
ज्ञानी, गुरु, संत, सन्यासी ।
सब तेरे चरणा-भिलाषी ।३१।
सकल विश्व में मान तुम्हारा ।
नमन करे तुमको जग सारा ।३२।

जो भी तेरा ध्यान लगाए ।
भेद तीन लोकों का पाए ।३३।
ज्ञान रसायन सभे पिलाती ।
अन्धकार - तुम दूर भगाती ।३४।
विद्यालय हो, महा विद्यालय ।
गुरुकुल, आश्रम या देवालय ।३५।
माता तेरे मन्दिर सारे ।
ज्ञान, ध्यान, विश्वास हमारे ।३६।
इनको जन-जन तक पहुंचाना ।
नवल ज्योति सब में प्रगटाना ।३७।
सब ही आदर करें तुम्हारा ।
भेद भाव मिट जाए सारा ।३८।
नहीं किसी के मन हों मैले ।
इतना ज्ञान जगत में फैले ।३९।
जय-जय-जय माता सुखदायक ।
गोयल की भी बनो सहायक ।४०।

दोहे

माता मम विनती सुनो,
दो अपनी पहचान।
तेरी किरपा से बनें,
हम अच्छे इन्सान।।
सुख सम्पति के साथ ही,
पाएं स्वस्थ दिमाग।
जिनकी किस्मत सो रही,
क्षण में जाए जाग।।
गोयल में भगती नहीं,
नहीं ज्ञान का भाव।
माता तेरी शरण हूं,
पार लगाना नाव।।

▪ ▪ ▪

डॉ० मनोहरलाल गोयल/प्रमुख पुस्तकें

- बिकाऊ टोरडो
- नणद भौजाई
- गोयल की गोशाला
- सुलगते सवाल
- बिहार गौरव कुँवर सिंह
- फौजा खड़ा बजार में
- दिल्ली दूर है
- शताब्दी के व्यक्तित्व (दो भाग)
- पहचान और अवदान
- जमशेदपुर'९१
- दर्पण
- इन्द्रधनुष
- कुण थानै समझावै
- क्रांति को बिगुल
- म्हारी यमलोक यात्रा
- राजस्थानी कवितावां
- मुट्ठी भर मुस्कान
- हम अग्रवाल हैं
- अग्रवाल कथा
- एक जमशेदपुर यह भी
- बकवास
- जमशेदपुर के साहित्यकार
- जमशेदपुर के राजस्थानी
- सौरभ

सम्पादित पत्रिकाएं/स्मारिकाएं –

- राजस्थानी मासिक **माणक** (जोधपुर)–बिहार अंक
- त्रैमासिक **संकल्प** (हैदराबाद)–राजस्थानी भाषा अंक
- सा. **बंग एक्सप्रेस** (आसनसोल)–होली विशेषांक
- सा. **हलचल** (बुदबुद) दीपावली विशेषांक
- त्रिभाषी वार्षिकी **त्रिवेणीधारा** (जमशेदपुर)
- तुलसी भवन पत्रिका
- **स्मारिकाएं** - गोसेवा, गोधाम, सेवांजलि आदि।

डॉ० मनोहरलाल गोयल/प्राप्त सम्मान/उपाधि

- हिन्दी साहित्य सम्मेलन-प्रयाग - **साहित्य वारिधि**
- विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ - **विद्यावाचस्पति/विद्यासागर (डी. लिट.)**
- अ० भा० साहित्यकार अभिनन्दन समिति - **राष्ट्रभाषा आचार्य**
- अ० भा० मारवाड़ी चुवा मंच - **डा. राममनोहर लोहिया पुरस्कार**
- अ० भा० श्रमिक एकता महासंघ - **माईकेल जॉन शील्ड**
- अ० भा० भोजपुरी भाषा सम्मेलन - **सुनीति कुमार चटर्जी सम्मान**
- हिन्दी अकादमी–हैदराबाद - **सम्पादकरत्न सम्मानोपाधि**
- अग्रोहा विकास ट्रस्ट - **विशिष्ट साहित्य सेवा सम्मान**
- अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन - **साहित्य सेवा सम्मान**
- बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन - **साहित्य एवं कला सम्मान**
- बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति – पटना
- जगतबंधु सेवा सदन पुस्तकालय - **राजनाथ राय पुरस्कार**
- मित्र परिषद् - **परसुराम विरही स्मृति रजक कप**
- मासिक नालंदा दर्पण - **व्यंग्य सम्राट उपाधि**
- साहित्य परिषद् - **साहित्य भास्कर**
- गौरव साहित्यक मंच - **सारस्वत सम्मान**
- अ० भा० भोजपुरी परिषद–उत्तर प्रदेश - **भोजपुरी भारती अलंकरण**

गोयल

मरूधर ब्यूटी

सुरंग मेहंदी पावडर

वितरक : गोयल ट्रेंडिंग कम्पनी, जमशेदपुर

परम गौभक्त

महाराजा अग्रसेन ज्ञान मन्दिर

टाटानगर गौशाला, जुगसलाई, जमशेदपुर-6

भावी पीढ़ी अपने आदर्शों और सामाजिक परम्पराओं के प्रति बहुत गंभीर नहीं है। वह महाराजा अग्रसेन को भी भूलती जा रही है, जिनकी वह संतान है। उसे महाराजा अग्रसेन के आदर्शों और सिद्धांतों से परिचित कराने के लिए तथा उनकी गोभक्ति का स्मरण कराने के उद्देश्य से गौशाला प्रांगण में उक्त ज्ञान मंदिर का निर्माण करवाया गया है। मंदिर भव्य एवं विशाल है जिसमें महाराजा श्री की सात फीट ऊंची भव्य प्रतिमा, उनके 18 गणाधीशों के साथ स्थापित की गयी है। महाराजा अग्रसेन के आदर्श और सिद्धांत अतीत की तरह आज भी प्रासंगिक हैं तथा वे भविष्य में भी प्रेरणा स्रोत और प्रकाश स्तंभ का काम करते रहेंगे। मन्दिर में महाराजा अग्रसेन से सम्बन्धित साहित्य चित्र एवं अन्य सामग्री पुस्तकालय में उपलब्ध रहेगी। संग्रहालय, वाचनालय तथा शोध केन्द्र का निर्माण द्वितीय चरण में किया जाना है।

कृष्ण कुमार अग्रवाल
संयोजक - मंदिर उपसमिति

चिमनलाल भालोटिया
अध्यक्ष - गौशाला

अग्रसेन चालीसा

साथ में - प्रणाम अग्रोहा ● महालक्ष्मी चालीसा ● सरस्वती चालीसा

डा. मनोहरलाल गोयल